International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 04(I), October - December, 2021, pp.119-124

# शिक्षकों का कक्षा–कक्ष प्रबन्धन एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

श्रीमती निधि बाला*

**प्रस्तावना**

विद्यालयों में शिक्षकों की तुलना में प्रधानाचार्य तथा प्रधानाध्यापकों के पास प्रशासनिक कार्यभार का प्रबन्धन अधिक होता है। शैक्षणिक गतिविधियों के अन्तर्गत अध्ययन के क्षेत्र में प्रबंधन की एक विशेष भूमिका होती है। इसके अन्तर्गत विद्यालय में प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक प्रभावी प्रबन्धन संरचना संकाय सदस्यों को प्रभावी पंक्ति में रखना एवं काल, समय तथा स्रोत का एक प्रभावशाली क्षेत्र का प्रतिपादन कर विद्यालयी संगठन को प्रभावी बनाने का प्रयास करता है। विद्यालयों में सामान्य प्रबन्धकीय कार्यों हेतु शिक्षक अपने पास जो संसाधन होते हैं उन्हीं संसाधन रूपी स्रोतों का उपयोग कर विद्यार्थियों द्वारा कक्षा–कक्ष अध्यापन में निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रबन्ध करता है। कक्षा–कक्ष प्रबन्धन द्वारा संगठनात्मक कार्य करने की अलग–अलग भूमिका तैयार करने में पर्याप्त अवसर भी मिलते है। कक्षा–कक्ष व्यवस्था द्वारा प्रबन्धन के तरीकों में भारी बदलाव तथा उसकी समस्याओं को उसी के अनुरूप आसानी से सुलझाया जा सकता है। कक्षा–कक्षा प्रबन्धन की विचरणशीलता की प्राक्रिया में केवल शिक्षक की दक्षता ही आवश्यक नहीं होती है बल्कि दक्षता द्वारा प्रभावी विद्यालय की भूमिका भी तैयार की जा सकती है, साथ ही प्रशासन के प्रकार, कुशल नेतृत्व तथा विद्यार्थियों के चारित्रिक विकास में भी प्रबन्धन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्राथमिक स्तर पर वर्तमान अनुसंधान समस्याओं के अन्तर्गत शिक्षकों का कक्षा–कक्ष प्रबन्ध तथा कक्षा–कक्ष अनुसंधान को प्रभावित करने वाले कारकों तक ही सीमित है।

अतः प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक विकास के बारे में सोचा जाना चाहिए और इसके लिए प्रभावशाली अनुदेशनात्मक कार्य क्रम विद्यालयों में चलाये जा रहे है लेकिन इसके लिए क्रियाशील शिक्षकों की उपलब्धता होनी चाहिए। शिक्षकों की अध्यापन दक्षता, कक्षा कक्ष प्रबन्धन व विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि आश्रित चर के रूप में है। ऐसा माना जाता है कि शिक्षकों की अध्यापन दक्षता न केवल कक्षा में उसके व्यवहार को प्रभावित करता है बल्कि विद्यार्थियों के व्यवहार को भी प्रभावित करता है।

एक शिक्षक अपने कर्तव्य का निर्वाह कैसे करता है यह बहुत कुछ उसके दृष्टिकोण, मूल्यों एवं विश्वासों व दक्षता पर निर्भर करता है। एक सकारात्मक दृष्टिकोण किसी कार्य को न केवल अधिक सरल बना देता है बल्कि उसे अधिक सन्तोषजनक और व्यावसायिक रूप से अच्छा परिणाम देने वाला बना देता है। इसके विपरीत एक नकारात्मक दृष्टिकोण एक शिक्षक के कार्य को अधिक कठिन, अधिक जटिल, एवं अधिक कष्टदायक बना देता है।

## 'k{kf.kd çcU/ku

शैक्षणिक प्रबन्धन का प्राथमिक द्वार तभी खोला जा सकता है जब विद्यालय संगठन तथा अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया का प्रबन्धन किया जाये। शैक्षणिक गतिविधियों के अन्तर्गत अध्ययन–अध्यापन के क्षेत्र में प्रबन्ध की एक विशेष भूमिका होती है। विद्यालयों में सामान्य प्रबन्धकीय कार्यो हेतु शिक्षक के पास जो संसाधन होते है उन्हीं संसाधन रूपी स्त्रोतों का उपयोग कर विद्यार्थियों

6 प्राचार्य, के. एम. डी. मेमोरियल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, तेजावाला, जयपुर, राजस्थान।

द्वारा कक्षा–कक्ष अध्यापन में निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रबन्ध करता है। कक्षा–कक्ष प्रबन्धन द्वारा संगठनात्मक कार्य करने की अलग–अलग भूमिका तैयार करने के पर्याप्त अवसर भी मिलते है। कक्षा–कक्ष व्यवस्था द्वारा प्रबन्धन के तरीकों में भारी बदलाव तथा उसकी समस्याओं को उसी के अनुरूप आसानी से सुलझाया जा सकता है। कक्षा–कक्षा प्रबन्धन की विचरणशीलता की प्रक्रिया में केवल शिक्षक की दक्षता ही आवश्यक नहीं होती बल्कि दक्षता द्वारा प्रभावी विद्यालय की भूमिका भी तैयार की जा सकती है, साथ ही प्रशासन के प्रकार, कुशल नेतृत्व तथा विद्यार्थियों के चारित्रिक विकास में भी प्रबन्धन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्राथमिक स्तर पर वर्तमान अनुसंधान समस्याओं के अन्तर्गत शिक्षकों का कक्षा–कक्ष प्रबन्ध तथा कक्षा–कक्ष अनुसन्धान को प्रभावित करने वाले कारकों तक ही सीमित है।

कक्षा–कक्ष प्रबन्धन अधिगम–शिक्षक प्रक्रिया का एक अनिवार्य अंग माना गया है। कक्षा का प्रभावी प्रबन्धन शिक्षक की अनुदेशात्मक प्रक्रिया के प्रति सक्रियता को दर्शाता है। यह महत्वपूर्ण रूप से एक शिक्षक की कार्यकुशलता तथा प्रभावी कार्य सम्पादन पर निर्भर करता है। इससे छात्रों की अधिगम कुशलता में वृद्धि होती है। कक्षा प्रबन्धन का विद्यार्थियों के अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति के साथ गहरा सम्बन्ध है। सफल कक्षा प्रबन्धन, छात्रों के अधिगम पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। कक्षा–कक्ष प्रबन्धन को उस प्राक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें कक्षा कक्ष के सभी संसाधनों (भौतिक एवं मानवीय) एवं क्रियाओं का प्रबन्धन सम्मिलित है, जिसमें सीखने वाले या अधिगमकर्ता (बालक) की वृद्धि एवं विकास सम्भव होता है।

## 'kSf{kd miyfC/k

जैसा की नाम से स्पष्ट होता है कि शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धि को ही शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है इसके अन्तर्गत एक बालक एक समयावधि में उसके परीक्षण के बाद प्राप्त परिणाम ही उसकी शैक्षिक उपलब्धि बताता है। व्यक्ति अपने जीवन में विभिन्न क्र याओं के द्वारा अनेक प्रकार का ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करता है। वह ज्ञान एवं कौशल उसकी उपलब्धि कहलाती है। व्यक्ति की उपलब्धि के क्षेत्र भिन्न–भिन्न होते है जैसे एक व्यक्ति विज्ञान के क्षेत्र में, एक व्यक्ति सामाजिक कार्य के क्षेत्र में अपने कौशल की स्थापना करता है वह कौशल स्थापना उच्च मध्यम एवं निम्न स्तर की होती है इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में स्थापित ज्ञान या कौशल शैक्षिक उपलब्धि कहलाता है।

## mís';&

- सामान्य वर्ग आरक्षित वर्ग के प्राथमिक शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन का पता लगाना।
- सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन का पता लगाना।
- सामान्य वर्ग आरक्षित वर्ग के प्राथमिक शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सामान्य वर्ग के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- आरक्षित वर्ग के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

## ifjdYiuk

- आरक्षित वर्ग की महिला एवं पुरूष शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के पुरूष शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- सामान्य तथा आरक्षित वर्ग की महिला शिक्षिकाओं के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

## 'kks/k fof/k

शोधकत्री ने समस्या का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया और निष्कर्ष प्राप्त किया कि शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन उचित है।

सर्वेक्षण विधि प्रमुखतः घटनाओं, चरों व विशेषताओं की वर्तमान स्थितियों का वर्णन करती है। विशिष्ट मानव समुदाय, संस्थान, नीति एवं योजना की आलोचनात्मक ढंग से व्याख्या करना और इनके वर्तमान स्तर की स्वीकृत मानव क्रिया के साथ तुलना करके सुधार हेतु देना सर्वेक्षणविधि का मुख्य उद्देश्य होता है।

## 'kk/k v/;;u e i;Dr midj.k

प्रस्तुत शोधकार्य में सामान्य तथा आरक्षित वर्ग में कार्यरत प्राथमिक शिक्षकों की अध्यापन दक्षता एवं कक्षा–कक्ष प्रबन्धन का अध्ययन किया गया है तथा अध्यापन दक्षता एवं कक्षा–कक्षप्रबन्धन हेतु शोधकर्त्री ने निम्नाँकित उपकरण प्रस्तुत किए है–

- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन मापनी का उपयोग किया गया है जो कि स्वनिर्मित है।
- शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने हेतु विद्यार्थियों के प्राप्तांको का प्रयोग किया गया है।

d{kk&d{k çcU/ku çekiuh l çkIr nÙkk dk fo'y"k.k] 0;k[;k] x.kuk rFkk fu"d"k&

lkj.kh 1% lkekU; o vkjf{kr ox dk f'k{kdk dk d{kk d{k çcU/ku dk rqyukRed v/;;u

| क्र. सं. | कक्षा कक्षा प्रबन्धन के आयाम | सामान्य वर्ग के शिक्षक | आरक्षित वग के शिक्षक | 'टी'. मूल्य | 05 / .01 स्तर पर सार्थकता | N = 64 मध्यमान प्रमाप विचलन | N = 64 मध्यमान प्रमाप विचलन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | योजना एवं संगठनात्मक कार्य | 35.50 | 6.54 | 24.60 | 5.60 | 2.72 | .01 |
| 2. | अभिप्रेरणात्मक कार्य | 35.50 | 6.03 | 21.90 | 4.98 | 3.98 | .01 |
| 3. | मूल्यांकन कार्य | 35.50 | 5.90 | 20.08 | 4.78 | 0.95 | .01 सार्थक नहीं |
| 4. | पर्यवेक्षण एवं नियंत्रण सम्बन्धी कार्य | 33.03 | 5.99 | 21.70 | 5.02 | 3.50 | .01स्तर पर |
| | स्वतंत्रता के अंश = 126 | | .05 स्तर की टेबल मान 52.56 | | | | |

तालिका 1 के इस भाग में सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्ध को योजना एवं संगठनात्मक कार्य, अभिप्रेरणात्मक कार्य, मूल्यांकन कार्य एवं पर्यवेक्षण एवं नियंत्रण सम्बन्धी कार्यों के साथ प्रदर्शित किया गया है। इस तालिका में सामान्य व आरक्षित वर्ग के शिक्षकों के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन एवं टी–मूल्य विभिन्न उपकरणों के साथ दर्शाया गया है।

तालिका 1 में सामान्य आरक्षित वर्ग शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन की योजना एवं संगठनात्मक कार्यों के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन के आधार पर टी–मूल्य 2.72 प्राप्त हुआ जो स्वीकृत किया जाता है। इससे स्पष्ट होंता है कि शून्य परिकल्पना "सामान्य एवं आरक्षित वर्ग शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन में (योजना एवं संगठनात्मक कार्य) सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है" अस्वीकृत की जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि शून्य परिकल्पना "सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन में (योजना एवं संगठनात्मक कार्य) सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है" अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् सामान्य व आरक्षित वर्ग सामान्य वर्ग शिक्षकों का उच्च मध्यमान योजना एवं संगठनात्मक कार्यो को प्रभावी बनाता है अपेक्षाकृत आरक्षित वर्ग शिक्षकों के।

उपरोक्त तालिका के अभिप्रेरणात्मक कार्य, मूल्यांकन कार्य एवं पर्यवेक्षण नियंत्रण सम्बन्धी कार्यों के प्रमाप व विचलन व मध्यमान के आधार पर टी–मूल्य क्रमशः 3.98, .95 व 3.50 प्राप्त हुआ।

इस आधार पर अभिप्रेरणात्मक कार्य एवं पर्यवेक्षण सम्बन्धी कार्य की शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है जबकि मूल्यांकन सम्बन्धी कार्य की शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अर्थात् सामान्य व आरक्षित वर्ग शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन सम्बन्धी अभिप्रेरणात्मक कार्य एवं पर्यवेक्षण नियंत्रण सम्बन्धी कार्यों में अन्तर पाया जाता है जबकि मूल्यांकन सम्बन्धी कार्य आरक्षित एवं सामान्य शिक्षकों का समानता रखता है।

fu"d"k

- सामान्य व आरक्षित वर्ग शिक्षकों के कक्षा प्रबन्धन के "योजना एवं संगठनात्मक कार्य" में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अर्थात सामान्य वर्ग के अध्यापक कक्षा–कक्ष प्रबन्ध में योजना बनाने व संगठन के चुनाव करने में आरक्षित वर्ग शिक्षकों की अपेक्षा प्रभावी कार्य करते हैं। जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च स्तरीय पाई जाती है।
- सामान्य व आरक्षित वर्ग शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्ध "अभिप्रेरणात्मक कार्य में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अर्थात सामान्य वर्ग शिक्षक छात्रों को उच्च उपलब्धि के लिये प्रेरित करने में आरक्षित वर्ग की अपेक्षा अच्छा तैयार करते हैं।
- सामान्य वर्ग आरक्षित वर्ग शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्ध "मूल्यांकन कार्य" में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। अर्थात सामान्य व आरक्षित वर्ग के शिक्षक छात्रों का कक्षा–कक्ष मूल्यांकन के लिए समान विधियों व प्रविधियों का प्रयोग करते हैं।
- कक्षाओं में पर्यवेक्षण व कक्षा–कक्ष नियंत्रण सम्बन्धी कार्यों में सामान्य व आरक्षित वर्ग के शिक्षक सार्थक अन्तर रखते हैं। अर्थात कक्षाओं का पर्यवेक्षण रखने व नियंत्रण करने में सामान्य वर्ग के शिक्षक आरक्षित वर्ग शिक्षकों की अपेक्षा अच्छा योगदान देते हैं जिससे की उनकी कक्षा–कक्ष उपलब्धि श्रेष्ठ होती है।

**सारणी 2: सामान्य वर्ग प्राथमिक महिला एवं पुरूष शिक्षकों के कक्षा कक्ष प्रबन्धन का तुलनात्मक अध्ययन**

| क्र. सं. | कक्षा कक्षा प्रबन्धन के आयाम | सामान्य महिला शिक्षक | सामान्य पुरुष शिक्षक | 'टी'. मूल्य | 05/.01 स्तर पर सार्थकता | N = 64 मध्यमान प्रमाप विचलन | N = 64 मध्यमान प्रमाप विचलन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | योजना एवं संगठनात्मक कार्य | 17.75 | 6.08 | 16.47 | 5.96 | 3.56 | .01 स्तर परं |
| 2. | अभिप्रेरणात्मक कार्य | 17.53 | 5.96 | 15.94 | 5.08 | 4.29 | .01 स्तर परं |
| 3. | मूल्यांकन कार्य | 17.28 | 4.92 | 15.84 | 6.05 | 3.08 | .01 सार्थक नहीं |
| 4. | पर्यवेक्षण एवं नियंत्रण सम्बन्धी कार्य | 16.69 | 3.58 | 15.02 | 3.54 | 3.68 | .01 स्तर पर |
| | .05 स्तर पर सार्थकता मूल्य = 52.56 | | | .01 स्तर पर सार्थकता मूल्य = 2.58 | | | |

उपरोक्त तालिका में सामान्य वर्ग महिला व पुरूष शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रब्धन को विभिन्न उपआयामों (योजना एवं संगठनात्मक कार्य, अभिप्रेरणात्मक कार्य, मूल्यांकन कार्य एवं पर्यवेक्षण नियंत्रण कार्य) के साथ प्रदर्शित किया गया है। उपरोक्त सारणी में सामान्य वर्ग महिला एवं पुरूष शिक्षकों के कक्षा कक्ष प्रबन्धन के मध्यमान, प्रमाप विचलन व टी मूल्य को दर्शाया गया है।

उपरोक्त तालिका के उपभाग योजना एवं संगठन, अभिप्रेरणा, मूल्यांकन कार्य एवं पर्यवेक्षण सम्बन्धी कार्यों के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन के आधार पर टी–मूल्य क्रमश रू3.56, 4.29, 3.08 व 3.68 प्राप्त हुए जो प्रदर्शित करते हैं कि शून्य परिकल्पना "सामान्य वर्ग प्राथमिक महिला एवं पुरूष शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है" अस्वीकृत की जाती है। अर्थात सामान्य वर्ग महिला व पुरूष शिक्षकों के

कक्षा–कक्ष प्रबन्धन के विभिन्न उपभागों (योजना एवं संगठन, अभिप्रेरणात्मक कार्य, मूल्यांकन कार्य, एवं पर्यवेक्षण कार्य) में अन्तर पाया जाता है। सामान्य वर्ग महिला शिक्षिकाओं के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन सम्बन्धी उच्च मध्यमान सामान्य वर्ग पुरूष शिक्षकों की तुलना में अच्छे कक्षा–कक्ष प्रबन्धन को दर्शाता है।

fu"d"k

- सामान्य वर्ग प्राथमिक महिला व पुरूष शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन योजना एवं संगठनात्मक कार्य" में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अर्थात सामान्य वर्ग के महिला व पुरूष शिक्षक भावी योजनायें बनाने व उन योजनाओं को संगठनात्मक रूप देने में अलग–अलग मत रखते हैं।
- छात्र छात्राओं को प्रेरित करने में सामान्य वर्ग महिला व पुरूष शिक्षकों में प्रभावी अन्तर पाया जाता है अर्थात् सामान्य महिलाओं की अपेक्षा सामान्य वर्ग पुरूष शिक्षक कक्षाओं में छात्रों को कम प्रेरित कर पाते हैं।
- कक्षाओं में छात्र मूल्यांकन कार्यों में सामान्य महिला व पुरूष शिक्षकों के कार्यों में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अर्थात सामान्य महिला शिक्षिकाएँ सामान्य वर्ग पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा कक्षा–कक्ष प्रबन्ध में मूल्यांकन कार्य बेहतर ढंग से कर पाती है।
- सामान्य वर्ग महिला व पुरूष शिक्षकों में कक्षा–कक्ष प्रबन्ध "पर्यवेक्षण एवं नियंत्रण सम्बन्धी कार्यों में सार्थक अन्तर पाया जाता है अर्थात सामान्य वर्ग महिला शिक्षिकाऐं पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा कक्षाओं की देखरेख व नियंत्रण का कार्य प्रभावी ढंग से कर पाती है।

**सारणी 3: आरक्षित वर्ग प्राथमिक महिला एवं पुरूष शिक्षकों के कक्षा कक्ष प्रबन्धन का तुलनात्मक अध्ययन**

| क्र. सं. | कक्षा कक्षा प्रबन्धन के आयाम | vkjf{kr efgyk | vkjf{kr i#"k | 'टी'. मूल्य | 05/.01 स्तर पर सार्थकता | N = 64 मध्यमान प्रमाप विचलन | N = 64 मध्यमान प्रमाप विचलन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | योजना एवं संगठनात्मक कार्य | 68.75 | 8.06 | 58.50 | 6.82 | 1.92 | .01 स्तर पर |
| 2. | अभिप्रेरणात्मक कार्य | 62.05 | 7.52 | 57.60 | 5.98 | 3.50 | .01 स्तर पर |
| 3. | मूल्यांकन कार्य | 58.60 | 6.48 | 56.64 | 66.30 | 1.08 | 01 सार्थक नहीं |
| 4. | पर्यवेक्षण एवं नियंत्रण सम्बन्धी कार्य | 59.15 | 6.90 | 52.51 | 5.90 | 3.68 | .01 स्तर पर |
| | df = 63 .05 स्तर पर सार्थकता मूल्य = 52.56 | | | .01 स्तर पर सार्थकता मूल्य = 2.58 | | | |

उपरोक्त तालिका में आरक्षित वर्ग महिला व पुरूष शिक्षकों के कक्षा कक्ष प्रबन्ध के विभिन्न आयामों (योजना एवं संगठन, अभिप्रेरणात्मक कार्य, मूल्यांकन कार्य एवं पर्यवेक्षण और नियंत्रण सम्बन्धी कार्य) के मध्यमान, प्रमाप विचलन व टी मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।

उपरोक्त तालिका के विभिन्न उपभागों (योजना एवं संगठनात्मक, अभिप्रेरणात्मक कार्य, मूल्यांकन कार्य, पर्यवेक्षण सम्बन्धी कार्यों) के मध्यमान एवं प्रमापविचलन के आधार पर टी मूल्य क्रमशरू– 1.92, 3.50, 1.08 व 3. 08 प्राप्त हुआ है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना "आरक्षित वर्ग प्राथमिक महिला व पुरूष शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है" योजना एवं संगठनात्मक कार्यों, मूल्यांकन कार्यों के आधार पर स्वीकृत की जाती है जबकि अभिप्रेरणात्मक कार्य एवं पर्यवेक्षण और नियंत्रण संबंधी कार्यों के आधार पर अस्वीकृत की जाती है।

तालिका के परिणाम स्पष्ट करते हैं कि आरक्षित वर्ग महिला व पुरूष शिक्षकों के कक्षा कक्ष प्रबन्धन में अभिप्रेरणात्मक कार्य, पर्यवेक्षण और नियंत्रण सम्बन्धी कार्यों में स्पष्ट पाया जाता है। आरक्षित महिला शिक्षिकाओं का उच्च मध्यमान पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक अभिप्रेरणात्मक कार्य एवं पर्यवेक्षण कार्यों को प्रदर्शित करता है जबकि योजना एवं संगठनात्मक कार्यों, मूल्यांकन कार्यो में आरक्षित वर्ग महिला व पुरूष शिक्षकों के कार्यों में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है।

fu"d"k

- आरक्षित वर्ग प्राथमिक महिला व पुरूष शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्ध "योजना एवं संगठनात्मक कार्य" एवं ''मूल्यांकन कार्य" में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है अर्थात् आरक्षित वर्ग के महिला व पुरूष शिक्षक भावी योजनायें बनाने, उन योजनाओं की पूर्ति के लिये संगठन बनाने, एवं कक्षाओं में छात्र मूल्यांकन कार्य का प्रबन्धन करने में कोई अलग तरीका या विधि प्रयोग नहीं करते हैं ये दोनों वर्ग योजना एवं संगठन तथा मूल्यांकन करने में समान योग्यतायें रखते हैं।
- आरक्षित वर्ग महिला व पुरूष शिक्षकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्ध "अभिप्रेरणात्मक कार्य" एवं पर्यवेक्षण नियंत्रण सम्बन्धी" कार्यो। में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अर्थात् आरक्षित वर्ग महिला शिक्षिकाएँ पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा छात्रों को प्रेरित करने व कक्षाओं को देखने व कक्षाओं में नियंत्रण रखने में अलग–अलग योग्यतायें व कुशलतायें रखते हैं।

**References**


1. Abdul Gafoor, K. (2000), Teachers as Professionals, University News, 38(27), July 3, pp-4-5
2. Bala, Madhu (1995), Classroom Interaction-Learning Behaviour and Achievement, S.S. Publishers, Delhi.
3. Jangira N.K. (1982), Core Teaching Skills: Micro teaching approach, NCERT, Delhi.
4. Jangira N.K., Singh L.C. and Shukla, Neeraja (1983), Research on Teachers in India - A Survey (Prepared for the National Commission on Teachers), pp 28-29.
5. John W. Best and J.V. Kahn (1986), Research in Education, Fifth Edition 1986 Prentice Hall of India Pvt. Ltd, New Delhi, pp 11-12.
6. Kakkar, S.B. (1970), Teacher Quality Rating Scale - An Abstract. In Udai Pareek and T.V. Venkataswara Rao (Eds.): Handbook of Psychological and Social Instruments, Baroda, Samashti, pp 160-161.
7. Kaul, L. (1972), Factorial Study of Certain Personality Variables of Popular Teachers in Secondary Schools, Unpublished Doctoral Dissertation, Kurukshetra University.
8. Mortimore, P. (1994), School Effectiveness and Management of Effective Learning and Teaching, School Effectiveness and School Improvement, Vol. 4 (4), pp 290-310.
9. Nair, B. (1967), An Investigation into the Classroom Climate by Observing Teacher Behaviour in Standard VI in the School of Trivandrum City, Unpublished M.Ed. Dissertation, University of Kerala, Trivandrum.
10. Thakur T. (1976), Who is a Good Teacher ? (A Stidy Based on the Opinion of Senior Pupils, SIE, Assam.
11. Van Manen M. (2002), Introduction : The Pedagogical Task of Teaching, Teaching and Teacher Education, 18, pp 135-138-


❖◆❖